UPSC-CSE 2027/28

DAILY CURRENT AFFAIRS

ONE STOP SOLUTION

By **Faiyaz Sir**



The Indian EXPRESS

THE HINDU

pib PRESS INFORMATION BUREAU पत्र सूचना कार्यालय

27 OCTOBER

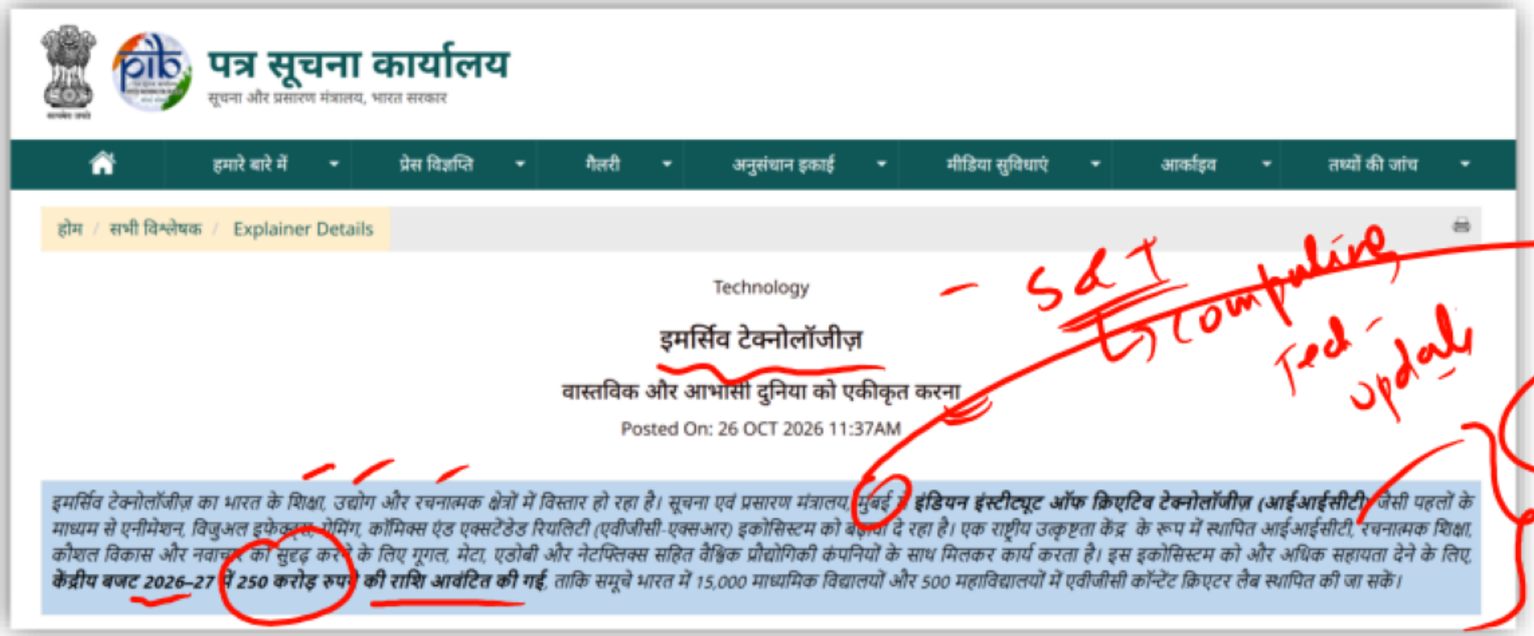
COMPLETE COVERAGE | EXAM FOCUSED | ANALYSIS MADE EASY | STATIC + CURRENT INTEGRATION

STAY AHEAD STAY PREPARED


Result Mitra
अब्राहम लिंकन
(Abraham Lincoln)
“भले ही आप धीमी गति से चलें,
लेकिन कभी पीछे मत हटिए!”
UPSC
DREAM
STUDY
PRACTICE
ACHIEVE
UPSC

आज क्या पढ़ेंगे?

- Immersive Technology
- SEM (Special Executive Magistrate)
- Click to Cancel Rule
- CEC/EC
- DAC (Defence Acquisition Council)
- 12th BRICS Parliamentary Forum
- 13th ASEAN Defence Ministers Meeting
- Menga Dam
- DPDP Act 2023
- Anaemia – DFS (Double Fortified Salt)
- Lula - Brazil
- Mecca Pact
- Student Protest – Serbia
- Ladakh – 100% Organic UT
- China Zorrila
- World Masala Security Conference
- Books



पत्र सूचना कार्यालय
सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

हमारे बारे में | प्रेस विज्ञप्ति | गैलरी | अनुसंधान इकाई | मीडिया सुविधाएं | आर्काइव | तथ्यों की जांच

होम / सभी विश्लेषक / Explainer Details

Technology

इमर्सिव टेक्नोलॉजीज़

वास्तविक और आभासी दुनिया को एकीकृत करना

Posted On: 26 OCT 2026 11:37AM

*इमर्सिव टेक्नोलॉजीज़ का भारत के शिक्षा, उद्योग और रचनात्मक क्षेत्रों में विस्तार हो रहा है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, मुंबई में **इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव टेक्नोलॉजीज़ (आईआईसीटी)** जैसी पहलों के माध्यम से एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग, कॉमिक्स एंड एक्सटेंडेड रियलिटी (एवीजीसी-एक्सआर) इकोसिस्टम को बढ़ावा दे रहा है। एक राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र के रूप में स्थापित आईआईसीटी, रचनात्मक शिक्षा, कौशल विकास और नवाचार को सुदृढ़ करने के लिए गूगल, मेटा, एडोबी और नेटफ्लिक्स सहित वैश्विक प्रौद्योगिकी कंपनियों के साथ मिलकर कार्य करता है। इस इकोसिस्टम को और अधिक सहायता देने के लिए, **केंद्रीय बजट 2026–27 में 250 करोड़ रुपये की राशि आवंटित की गई**, ताकि समूचे भारत में 15,000 माध्यमिक विद्यालयों और 500 महाविद्यालयों में एवीजीसी कॉन्टेंट क्रिएटर लैब स्थापित की जा सकें।*

डिजिटल से इमर्सिव की ओर: भारत की अगली छलांग

- पिछले दशक में, भारत ने एक ऐसा मजबूत डिजिटल इकोसिस्टम विकसित किया है, जिसने प्रौद्योगिकी के साथ लोगों की दैनिक गतिविधियों और संवाद के तरीकों को बदल दिया है। **यूपीआई, आधार, डिजिलॉकर, उमंग और भाषिणी** जैसे प्लेटफॉर्मों ने सेवाओं और सूचनाओं तक पहुँच का विस्तार किया है। जिस तरह डिजिटल प्लेटफॉर्म अधिक व्यापक होते जा रहे हैं, अगला अवसर इन संवादों को और अधिक **परस्पर संवादात्मक, दृश्यात्मक और अनुभव आधारित** बनाने में निहित है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), हाई स्पीड कनेक्टिविटी और कंप्यूटिंग के क्षेत्र में हुई तीव्र प्रगति केवल डिजिटल सेवाओं तक पहुँच तक सीमित न रहकर उनका प्रत्यक्ष अनुभव कर पाने को संभव बना रही है। *इस बारे में विस्तार से पढ़ने के लिए - इंडियाज डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया विद एआई पर क्लिक कीजिए*



- यह उभरता चरण **इमर्सिव टेक्नोलॉजीज** द्वारा आकार ले रहा है, जो डिजिटल कॉन्टेंट को लोगों की वास्तविक दुनिया के अनुभव के और करीब लाती हैं। **वर्चुअल रियलिटी, ऑगमेंटेड रियलिटी, मिक्स्ड रियलिटी और 360-डिग्री एक्सपीरिएंस** परस्पर संवादात्मक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं और उपयोगकर्ताओं को डिजिटल कॉन्टेंट के साथ नए तरीकों से जुड़ने में सक्षम बना सकते हैं। ये क्षमताएँ वर्चुअल सिमुलेशन के माध्यम से शिक्षा, इमर्सिव प्रशिक्षण के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा और आभासी भ्रमण के माध्यम से पर्यटन के क्षेत्र में बदलाव ला सकती हैं। इसके अतिरिक्त, ये **संस्कृति, गेमिंग, मनोरंजन, खुदरा व्यापार और अन्य क्षेत्रों** में अधिक आकर्षक अनुभव प्रदान कर सकती हैं। इस प्रकार, इमर्सिव टेक्नोलॉजीज़ पारंपरिक स्क्रीन आधारित संवाद से आगे बढ़कर भारत के मौजूदा डिजिटल इकोसिस्टम के प्रभाव और पहुँच का विस्तार कर सकती हैं।

- इस अवसर की व्यापकता भारत के तेजी से बढ़ते इमर्सिव टेक्नोलॉजी बाजार में परिलक्षित होती है। इस बाजार से **वर्ष 2023 में 1,259.5 मिलियन डॉलर का राजस्व** प्राप्त हुआ था और **वर्ष 2030 तक इसके 29.8 प्रतिशत सीएजीआर की दर से बढ़कर 7,818.7 मिलियन डॉलर** तक पहुँचने का अनुमान है। अपने डिजिटल इकोसिस्टम, बढ़ते मध्यम वर्ग और ई कॉमर्स को अपनाने में वृद्धि होने के कारण भारत के **एशिया प्रशांत क्षेत्र का सबसे तेजी से बढ़ने वाला क्षेत्रीय बाजार बनने** का अनुमान है। यह वृद्धि भारत के लिए केवल एक बड़ा बाजार होने से आगे बढ़कर **इमर्सिव टेक्नोलॉजी के वैश्विक केंद्र** के रूप में उभरने का अवसर प्रस्तुत करती है। अनुसंधान, स्टार्टअप, प्रतिभा, कॉन्टेंट और स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में क्षमताओं का विकास भारत को इमर्सिव अनुभवों की अगली पीढ़ी को आकार देने तथा वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था में अपनी स्थिति मजबूत करने में सहायता कर सकता है।

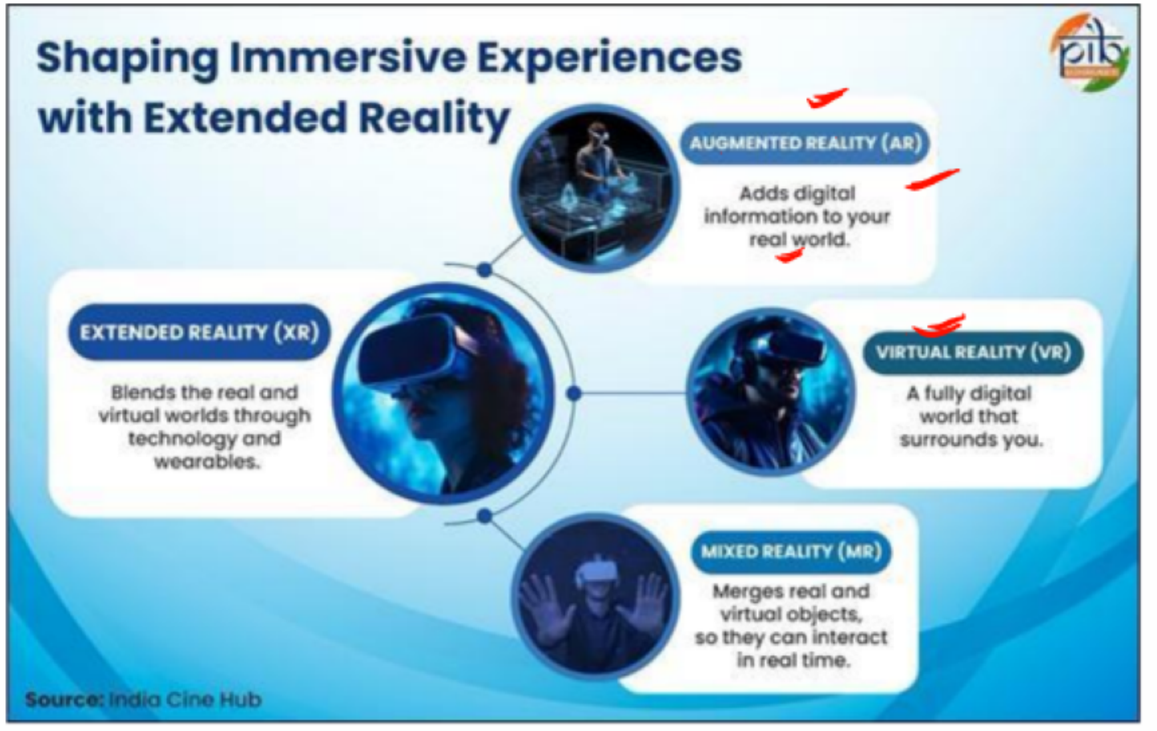


Creative Minds, Catalyzing Science, Empowering Technologies

- भारत के उभरते विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन का दूसरा संस्करण, ईएसटीआईसी 2026, नई दिल्ली के भारत मंडपम में 27 से 29 अक्टूबर 2026 तक आयोजित किया जाएगा। यह सम्मेलन *"रचनात्मक मस्तिष्क, विज्ञान को गति प्रदान करना और प्रौद्योगिकियों को सशक्त बनाना"* विषय के अंतर्गत आयोजित होगा। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) द्वारा आयोजित ईएसटीआईसी 2026 में विभिन्न मंत्रालयों, शोधकर्ताओं, नवाचारकर्ताओं, उद्योग जगत के दिग्गजों, डीप टेक स्टार्टअप और वैश्विक विशेषज्ञों को एक साथ लाया जाएगा, ताकि उभरते विज्ञान और प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाया जा सके। इस सम्मेलन में **इमर्सिव टेक: जनरेटिव एक्सआर और स्पेशियल कंप्यूटिंग** सहित 12 विषयगत क्षेत्र शामिल होंगे। इस कार्यक्रम के तहत पूर्ण सत्र, तकनीकी चर्चाएँ और प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाएँगी। कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में अधिक जानने के लिए देखिए : ***ईएसटीआईसी 2026***

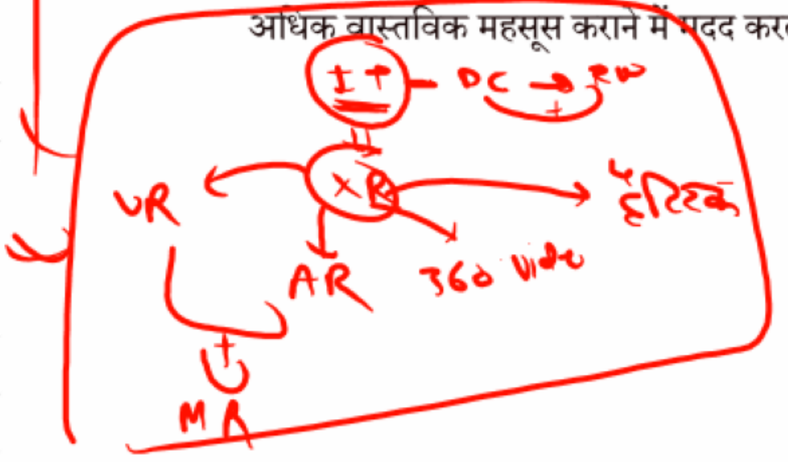
इमर्सिव टेक्नोलॉजीज़ को समझना

- इमर्सिव टेक्नोलॉजीज़ उभरती हुई प्रौद्योगिकियों का एक समूह हैं, जो परस्पर संवादात्मक, आकर्षक और वास्तविक अनुभव प्रदान करने वाले डिजिटल वातावरण का निर्माण करती हैं। इमर्सिव टेक्नोलॉजीज़ **वास्तविक और डिजिटल दुनिया** को एक साथ जोड़ सकती हैं। इनके माध्यम से उपयोगकर्ता डिजिटल कॉन्टेंट के साथ अधिक स्वाभाविक और अनुभवात्मक तरीके से जुड़ सकते हैं। उपयोगकर्ता डिजिटल वस्तुओं के साथ परस्पर संवाद कर सकते हैं और कृत्रिम रूप से निर्मित परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं। पारंपरिक डिजिटल मीडिया के विपरीत, ये प्रौद्योगिकियाँ इंद्रियों को विभिन्न स्तरों पर सक्रिय कर सकती हैं और किसी वातावरण में वास्तव में उपस्थित होने का अधिक सशक्त अनुभव प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, कोई विद्यार्थी केवल स्क्रीन पर चित्र देखने के बजाय एक आभासी प्रयोगशाला का अन्वेषण कर सकता है। इसी प्रकार, कोई पर्यटक किसी ऐतिहासिक धरोहर स्थल पर वास्तविक रूप से जाने से पहले उसका आभासी भ्रमण कर सकता है। इमर्सिव टेक्नोलॉजी के तीन सबसे सामान्य प्रकार वर्चुअल रियलिटी (वीआर), ऑगमेंटेड रियलिटी (एआर) और मिक्स्ड रियलिटी (एमआर) हैं । सामूहिक रूप से, इन प्रौद्योगिकियों को अक्सर एक्सटेंडेड रियलिटी (एक्सआर) कहा जाता है।



एक्सटेंडेड रियलिटी (एक्सआर)

- एक्सटेंडेड रियलिटी (एक्सआर) का आशय उन प्रौद्योगिकियों से है, जो कंप्यूटर प्रणालियों और पहनने योग्य उपकरणों के माध्यम से वास्तविक और डिजिटल वातावरण को एक साथ जोड़ती हैं। यह लोगों और डिजिटल कॉन्टेंट के बीच परस्पर संवाद के विभिन्न स्तरों का निर्माण करती है। एक्सआर में वर्चुअल रियलिटी (वीआर), ऑगमेंटेड रियलिटी (एआर) और मिक्स्ड रियलिटी (एमआर) शामिल हैं।
- **वर्चुअल रियलिटी (वीआर)** पूरी तरह से डिजिटल वातावरण का निर्माण करती है, जो उपयोगकर्ता को चारों ओर से घेर लेता है। यह मुख्य रूप से दृष्टि और ध्वनि इंद्रियों को सक्रिय करके वास्तविक रूप से उस वातावरण में मौजूद होने का सशक्त अनुभव प्रदान करती है। उपयोगकर्ता विशेष उपकरणों की सहायता से इस कृत्रिम वातावरण का अन्वेषण और उसके साथ परस्पर संवाद कर सकते हैं।
- **ऑगमेंटेड रियलिटी (एआर)** उपयोगकर्ता के मौजूदा भौतिक परिवेश में डिजिटल जानकारी जोड़ती है। यह वास्तविक दुनिया के वातावरण को दृश्यमान रखते हुए दृष्टि और ध्वनि को सक्रिय कर सकती है। उदाहरण के लिए, एआर वास्तविक दुनिया पर दिशाओं, सूचना या डिजिटल वस्तुओं को प्रदर्शित कर सकती है।
- **मिक्स्ड रियलिटी (एमआर)** एक परस्पर संवादात्मक वातावरण में वास्तविक और डिजिटल दुनियाओं का संयोजन करती है। यह दृष्टि और ध्वनि, दोनों इंद्रियों को सक्रिय कर सकती है तथा डिजिटल वस्तुओं को वास्तविक परिवेश के साथ परस्पर क्रिया करने में सक्षम बनाती है। उपयोगकर्ता डिजिटल वस्तुओं को इस प्रकार देख सकते हैं और उनके साथ अंतःक्रिया कर सकते हैं, मानो वे वास्तविक परिवेश का ही हिस्सा हों।
- **360-डिग्री वीडियो** और **हैप्टिक टेक्नोलॉजी** जैसी अन्य संबंधित तकनीकें भी व्यापक इमर्सिव टेक्नोलॉजी इकोसिस्टम का हिस्सा हैं। 360-डिग्री वीडियो उपयोगकर्ताओं को किसी दृश्य को सभी दिशाओं में देखने की सुविधा प्रदान करती है। उपयोगकर्ता देखने की दिशा बदल सकते हैं और रिकॉर्ड किए गए वातावरण के विभिन्न हिस्सों का अन्वेषण कर सकते हैं। हैप्टिक टेक्नोलॉजी स्पर्श आधारित प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए कंपन, दबाव या अन्य शारीरिक संवेदनाओं का उपयोग करती है। यह आभासी या परस्पर संवादात्मक अनुभवों के दौरान शारीरिक संवेदनाओं का अनुकरण करके डिजिटल गतिविधियों को अधिक वास्तविक महसूस कराने में मदद करती है।



अनुभव की दुनिया में कदम: भारत इमर्सिव टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कैसे कर रहा है

शिक्षा

- **आईआईटी मद्रास के शोधकर्ता ग्रामीण विद्यालयों के लिए एआर / वीआर सक्षम शिक्षण समाधान विकसित कर रहे हैं।** इस पहल में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने हेतु डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जा रहा है। इसका उद्देश्य ऐसे **इमर्सिव, वीआर आधारित शिक्षण वातावरण** तैयार करना है, जहाँ विद्यार्थी इतिहास, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और भाषाओं जैसे विषयों का अध्ययन परस्पर संवादात्मक अनुभवों के माध्यम से कर सकें।

- ये प्रौद्योगिकियाँ कक्षा में सीखने की प्रक्रिया को अधिक रोचक बना सकती हैं। उदाहरण के लिए, एआर आधारित मोबाइल एप्लिकेशन एनिमेटेड तस्वीरों, इंटरैक्टिव मानचित्रों और ऐतिहासिक अभिलेखों के माध्यम से भारत के 500 वर्षों के इतिहास को जीवंत रूप में प्रस्तुत कर सकता है। इसी प्रकार, वीआर सिमुलेशन विद्यार्थियों को सौरमंडल का अन्वेषण करने या त्रि-आयामी मॉडलों के माध्यम से मानव शरीर का अध्ययन करने की सुविधा प्रदान कर सकते हैं। अमूर्त अवधारणाओं को दृश्य रूप में समझना आसान बनाकर, ये दृष्टिकोण सीखने की प्रक्रिया को अधिक समृद्ध कर सकते हैं और विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए तैयार करने में सहायता कर सकते हैं।

धरोहर और पर्यटन

- भारत की सांस्कृतिक विरासत को अधिक सुलभ और आकर्षक बनाने के लिए सरकार **एक्सटेंडेड रियलिटी (एक्स आर)** तथा अन्य डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर रही है। संस्कृति मंत्रालय ने संग्रहालयों में आगंतुकों के अनुभव को बेहतर बनाने और संग्रहालयों के संग्रह से संबंधित जानकारी को संरक्षित करने के लिए डिजिटल उपकरणों को अपनाया है। **जतन सॉफ्टवेयर** ऐसा ही एक उपकरण है, जो संग्रहालय की कलाकृतियों और उनसे संबंधित अभिलेखों का डिजिटलीकरण करने में सहायता करता है। जतन का उपयोग करके अब तक आठ राष्ट्रीय स्तर के संग्रहालयों और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के दो संग्रहालयों का डिजिटलीकरण किया जा चुका है। **म्यूजियम्स ऑफ इंडिया** नामक डिजिटल संग्रह के माध्यम से इनके संग्रह देखे जा सकते हैं, जिससे लोग भारत की विरासत का ऑनलाइन अन्वेषण कर सकते हैं।

शासन और अवसंरचना

- इमर्सिव टेक्नोलॉजीज़ भारत में अवसंरचना की योजना बनाने और उसके प्रबंधन के तरीकों को भी प्रभावित कर रही हैं। दूरसंचार विभाग ने **"संगम: डिजिटल ट्विन"** पहल शुरू की है, जिसमें बेहतर अवसंरचना नियोजन के लिए डिजिटल ट्विन टेक्नोलॉजी को 5जी, आईओटी और एआई के साथ जोड़ा गया है। डिजिटल ट्विन मैपिंग पहले से ही शहरी नियोजन में सहायता कर रही है, जिसका उदाहरण **वाराणसी अर्बन 3डी स्पेशियल प्लानिंग प्रोजेक्ट** है। वर्ष 2035 तक, भारत का लक्ष्य प्रमुख शहरी केंद्रों के लिए **नेशनल डिजिटल ट्विन** विकसित करना है। इसके अंतर्गत शहरी नियोजन और प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए शहरों की डिजिटल प्रतिकृतियाँ तैयार की जाएँगी।

डिजिटल ट्विन क्या है?

- डिजिटल ट्विन वास्तविक दुनिया की किसी वस्तु, प्रणाली या स्थान का आभासी मॉडल होता है। यह वास्तविक दुनिया से प्राप्त डेटा का उपयोग करके उसकी स्थितियों और कार्यप्रणाली को दर्शाता है। इससे उपयोगकर्ताओं को परिस्थितियों की निगरानी करने और संभावित परिवर्तनों का डिजिटल रूप से परीक्षण करने में सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए, किसी मशीन का डिजिटल ट्विन संभावित खराबियों की पहचान करने में मदद कर सकता है, जबकि किसी शहर का मॉडल योजनाकारों को ढाँचागत परियोजनाओं के कार्यान्वयन से पहले उनके संभावित प्रभावों का आकलन करने में सहायता कर सकता है। इसका एक उदाहरण दूरसंचार विभाग (डीओटी) द्वारा इंडिया मोबाइल कांग्रेस 2025 में प्रदर्शित मोबिलिटी डिजिटल ट्विन है। यह दूरसंचार से प्राप्त आवागमन संबंधी डेटा का उपयोग करके इस बात का विश्लेषण करता है कि लोग विभिन्न क्षेत्रों में किस प्रकार यात्रा और आवागमन करते हैं। दिल्ली के वसंत कुंज और सेंट्रल विस्टा में किए गए प्रदर्शनों के दौरान लोगों के दैनिक आवागमन के पैटर्न का अध्ययन किया गया और मेट्रो स्टेशनों के प्रभाव क्षेत्रों का आकलन करने में सहायता मिली। अयोध्या में, पर्यटकों के आवागमन, परिवहन के साधनों और ठहरने के पैटर्न का अध्ययन करने के लिए मोबिलिटी डेटा का उपयोग किया गया। इन विश्लेषणों से प्राप्त जानकारियाँ अधिकारियों को परिवहन संपर्क बेहतर बनाने, पर्यटन अवसंरचना में सुधार करने और परियोजनाओं को अंतिम रूप देने से पहले अधिक सूचित निर्णय लेने में सहायता कर सकती हैं।



इमर्सिव टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देना: भारत की मुख्य पहलें

- इमर्सिव टेक्नोलॉजी को सरकार के व्यापक **एवीजीसी-एक्सआर ढाँचे** के माध्यम से समर्थन प्रदान किया जाता है। इस ढाँचे में एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग, कॉमिक्स और एक्सटेंडेड रियलिटी शामिल हैं। इमर्सिव टेक्नोलॉजी के लिए भारत का नीतिगत समर्थन किसी अलग स्वतंत्र योजना के रूप में नहीं, बल्कि इन क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे व्यापक और एकीकृत प्रयासों के हिस्से के रूप में प्रदान किया जाता है।

एवीजीसी-एक्सआर प्रमोशन टास्क फोर्स

- एवीजीसी प्रमोशन टास्क फोर्स का गठन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (एआईबी) द्वारा अप्रैल 2022 में किया गया था। इसमें **एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग और कॉमिक्स (एवीजीसी) उद्योग, शिक्षाविदों तथा सरकार** के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया है। यह टास्क फोर्स इस क्षेत्र की वृद्धि और विकास को सुदृढ़ करने के समन्वित प्रयासों हेतु एक मंच प्रदान करती है। इसका कार्यादेश तीन प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है। इनमें **सार्वजनिक- निजी सहयोग, विभिन्न मंत्रालयों के बीच समन्वय और क्षेत्रीय विकास के लिए एकीकृत दृष्टिकोण** शामिल हैं।

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव टेक्नोलॉजीज (आईआईसीटी)

- टास्क फोर्स की सिफारिश पर, सरकार ने एवीजीसी-एक्सआर क्षेत्र के लिए कुशल प्रतिभाएँ तैयार करने के उद्देश्य से **राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (एनसीओई)** स्थापित किया। इसी पहल के परिणामस्वरूप वर्ष 2025 में **इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव टेक्नोलॉजीज (आईआईसीटी)** की स्थापना हुई। मार्च 2026 तक, आईआईसीटी ने एवीजीसी - एक्सआर क्षेत्र के विभिन्न विषयों में 18 पाठ्यक्रम शुरू किए हैं, जिनमें 135 से अधिक विद्यार्थियों ने नामांकन कराया है।

जेनेसिस

जेनेसिस (जेन-नेक्स्ट सपोर्ट फॉर इनोवेटिव स्टार्टअप्स)

- **इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने टियर-II और टियर-III शहरों में स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए जेनेसिस योजना को मंजूरी दी। वर्ष 2022 में शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य पाँच वर्षों में लगभग 1,600 प्रौद्योगिकी स्टार्टअप को सहायता प्रदान करना है। इनमें इमर्सिव टेक्नोलॉजीज़, जैसे एआर, वीआर और स्पेशियल कंप्यूटिंग पर काम करने वाले स्टार्टअप भी शामिल हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय स्टार्टअप हब के माध्यम से, यह योजना वर्तमान में 84 एआर / वीआर स्टार्टअप को सहायता प्रदान कर रही है। इसके अतिरिक्त, यह देश भर में 106 इनक्यूबेटरों को भी समर्थन देती है।**

- **भारत की एवीजीसी - एक्सआर विकास गाथा का नेतृत्व करने वाले राज्य**

- **कर्नाटक** की एवीजीसी-एक्सआर नीति 3.0 – एवीजीसी- एक्सआर कंपनियों के लिए कौशल विकास, अवसंरचना, उत्पादन अनुदान और वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करती है। राज्य में **केआईटीवीईएन एवीजीसी कोष** भी संचालित है, जिसके पास 20 करोड़ रुपये का कोष है। यह कोष एवीजीसी और संबंधित क्षेत्रों में कार्यरत कंपनियों में निवेश करता है।

- **महाराष्ट्र** की एवीजीसी-एक्सआर नीति 2025 की वित्तीय योजना 3,268 करोड़ रुपये की है और इसका विजन वर्ष 2050 तक के लिए है। यह नीति सरकारी सहायता और अवसंरचना के माध्यम से राज्य के एवीजीसी-एक्सआर इकोसिस्टम के विस्तार के लिए एक समर्पित ढाँचा प्रदान करती है।

- **तेलंगाना की 2016 की इमेज नीति** ने एनीमेशन, वीएफएक्स, गेमिंग और कॉमिक्स के लिए एक समर्पित ढाँचा स्थापित किया, जिसका प्रमुख केंद्र हैदराबाद का इमेज टॉवर है। इस इकोसिस्टम में 150 से अधिक एवीजीसी/ वीएफएक्स कंपनियाँ, 140 से अधिक गेमिंग और एनीमेशन कंपनियाँ, 30,000 प्रत्यक्ष रोजगार तथा सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया (एसटीपीआई) – इमेज के माध्यम से शामिल किए गए 100 स्टार्टअप हैं, जिन्हें निर्माण संबंधी अवसंरचना, प्रशिक्षण और ग्लोबल क्लाउड एक्सेस से समर्थन प्राप्त है।

- **तमिलनाडु की** एवीजीसी-एक्सआर नीति 2026 का लक्ष्य वर्ष 2030 तक 200 से अधिक स्टार्टअप स्थापित करना, लगभग 2 लाख रोजगार सृजित करना और भारत के एवीजीसी-एक्सआर बाजार में 20 प्रतिशत तक हिस्सेदारी प्राप्त करना है। यह नीति चेन्नई में "ईएलसीओटी वियान एवीजीसी-एक्सआर उत्कृष्टता केंद्र" को समर्थन देने का भी प्रावधान करती है। अगले तीन वर्षों में कोयंबटूर, मदुरै, तिरुचिरापल्ली, सेलम और तिरुनेलवेली क्षेत्रों में इसके सहायक केंद्र विकसित करने की योजना है।

- **केरल** की एवीजीसी-एक्सआर नीति 2024 विशेष रूप से इस क्षेत्र के लिए कुशल प्रतिभाओं की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करने पर केंद्रित है। इसमें उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप रोजगार भूमिकाओं, शिक्षकों के विकास और स्कूलों से लेकर उच्च शिक्षा तक वीआर, एआर, गेमिंग, वीएफएक्स तथा डिजिटल आर्ट से संबंधित पाठ्यक्रमों का प्रस्ताव है। इस मिशन का लक्ष्य वर्ष 2029 तक एवीजीसी-एक्सआर उद्योग में 50,000 नए रोजगार सृजित करना है, जिससे ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की केरल की प्रतिबद्धता मजबूत होती है।
- **मध्य प्रदेश** की एवीजीसी-एक्सआर नीति 2025 में उत्कृष्टता केंद्रों, एवीजीसी-एक्सआर प्रयोगशालाओं और लक्षित कौशल प्रशिक्षण को निवेश प्रोत्साहनों के साथ जोड़ा गया है। यह नीति पूँजी निवेश, रोजगार सृजन, निर्माण लागत, गुणवत्ता प्रमाणन और बौद्धिक संपदा के सृजन के लिए भी सहायता प्रदान करती है।
- **उत्तर प्रदेश** नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और प्रस्तावित अंतरराष्ट्रीय फिल्म सिटी के निकट जेवर में एवीजीसी-एक्सआर पार्क विकसित कर रहा है। इस पार्क में एनीमेशन, वीएफएक्स, गेमिंग, मोशन कैप्चर, वर्चुअल प्रोडक्शन और एक्सआर सुविधाओं को एकीकृत किया जाएगा। इसका उद्देश्य निवेश आकर्षित करना, स्टार्टअप को समर्थन देना, कुशल रोजगार सृजित करना और राज्य की डिजिटल रचनात्मक अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना है।
- **राजस्थान** ने अपने 2024–25 के बजट में एवीजीसी-एक्सआर नीति 2024 की घोषणा की, जिसका उद्देश्य एनीमेशन, वीएफएक्स, गेमिंग, कॉमिक्स और इमर्सिव टेक्नोलॉजी के इकोसिस्टम को मजबूत करना है। इस नीति के अंतर्गत **पात्र एनीमेशन/ वीएफएक्स/ एआर/ वीआर परियोजनाओं के लिए 50 लाख रुपये** तक और पात्र गेम डेवेलपमेंट परियोजनाओं के लिए **1 करोड़ रुपये** तक निर्माण प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है।
- **गुजरात** लक्षित सरकारी पहलों के माध्यम से स्वयं को एक प्रमुख एवीजीसी-एक्सआर केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। राज्य एक व्यापक एवीजीसी-एक्सआर नीति तैयार करने के उन्नत चरण में है, जिसमें अवसंरचना, कौशल विकास और स्टार्टअप को समर्थन देने पर ध्यान दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त, राज्य में पहले से ही एक मजबूत शैक्षणिक आधार मौजूद है—यहाँ 16 संस्थान एनीमेशन, वीएफएक्स और गेमिंग से संबंधित पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, जिससे इस क्षेत्र के लिए प्रतिभाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने में सहायता मिलती है।

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims Practice Questions)

- **प्रश्न 1: एवीजीसी-एक्सआर (AVGC-XR) क्षेत्र और इमर्सिव टेक्नोलॉजीज़ के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. 'इमर्सिव टेक्नोलॉजी' भौतिक दुनिया और डिजिटल या आभासी वातावरण को एकीकृत करने में सक्षम बनाती है।
2. मुंबई में 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव टेक्नोलॉजीज़' (IICT) की स्थापना रचनात्मक शिक्षा, कौशल विकास और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (Center of Excellence) के रूप में की गई है।
3. केंद्रीय बजट 2026-27 में देश भर के विद्यालयों और महाविद्यालयों में एवीजीसी कंटेंट क्रिएटर लैब (AVGC Content Creator Labs) स्थापित करने का प्रावधान किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

मुख्य परीक्षा (Mains Practice Questions)

- *"इमर्सिव टेक्नोलॉजीज़ (जैसे- AR/VR/XR) और AVGC (एनिमेशन, विज़ुअल इफेक्ट्स, गेमिंग और कॉमिक्स) इकोसिस्टम भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था और रचनात्मक क्षेत्रों को नई दिशा दे रहे हैं।" इस कथन के आलोक में भारत के शिक्षा, कौशल विकास और उद्योग क्षेत्र पर इसके प्रभावों का विश्लेषण कीजिए। हालिया सरकारी पहलों और बजटीय प्रावधानों का भी उल्लेख कीजिए।* **(250 शब्द, 15 अंक)**

Rural Prosperity

बारिश का पानी जमा करें (कैच द रेन)

प्रविष्टि तिथि: 26 OCT 2026 11:16 AM

जल संरक्षण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर नये सिरे से आह्वान

वर्षा जल संचय अभियान : एक नज़र मे

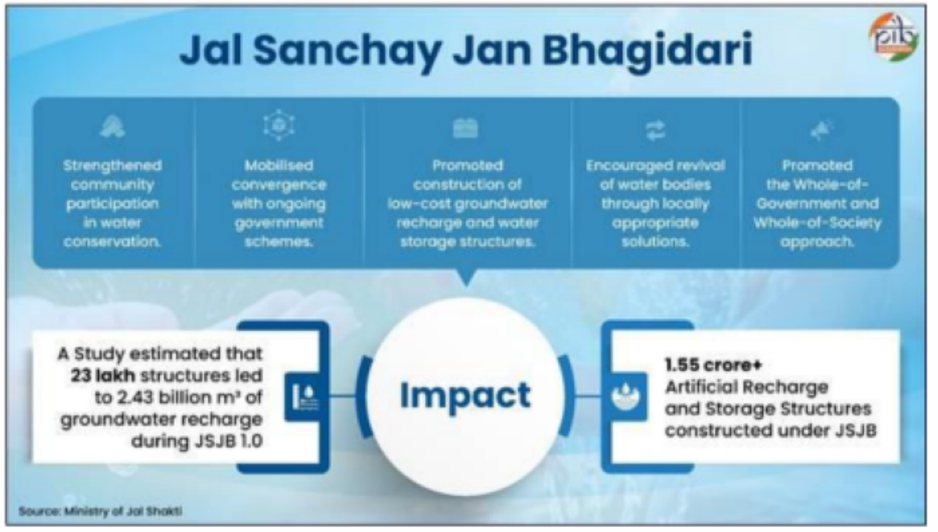
- 'कैच द रेन' (वर्षा जल संचयन) एक राष्ट्रव्यापी अभियान है, जो **वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण और जल निकायों के पुनरुद्धार** केन्द्रित है। यह अभियान समुदायों और संस्थानों को वर्षा जल का संरक्षण करने तथा जल सुरक्षा को मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसके तहत मानसून के दौरान अधिकतम जल संचय सुनिश्चित करने के लिए तालाबों और जलाशयों की सफाई को बढ़ावा दिया जाता है। साथ ही, जल संचयन वाले क्षेत्रों में हरित आवरण बढ़ाने के लिए **वनीकरण** को भी प्रोत्साहित किया जाता है।
- **इस अभियान के दौरान सुझाए गए जल संरक्षण संबंधी प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं:**
- घरों, आवासीय परिसरों और कार्यस्थलों में वर्षा जल संचयन प्रणालियां अपनाई जाएं।
- उपयुक्त स्थानों पर रिचार्ज पिट और रिचार्ज शाफ्ट स्थापित किए जाएं।
- भूजल पुनर्भरण को सुगम बनाने के लिए अनुपयोगी बोरवेलों की मरम्मत की जाए।
- बावड़ियों, कुओं और पारंपरिक जल निकायों का पुनरुद्धार किया जाए।
- जल संचयन क्षमता बढ़ाने के लिए तालाबों और जलाशयों से गाद निकाला जाए।
- जल संचयन और भूजल पुनर्भरण वाले क्षेत्रों में वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया जाए।

जल संचय जन भागीदारी (जेएसजेबी) 1.0 (2024)

- जल संचय जन भागीदारी 1.0 ने जल संरक्षण में **सामुदायिक भागीदारी को मजबूत** बनाया। जेएसजेबी 1.0 को 1 अप्रैल 2024 से 31 मई 2025 तक लागू किया गया। इस पहल में **समुदाय, कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) और लागत अर्थात् 3सी** के सिद्धांतों का पालन किया गया। इस पहल के तहत जल संरक्षण के प्रयासों को गति देने के लिए **सरकार की विभिन्न चालू योजनाओं के बीच तालमेल** को भी प्रोत्साहित किया गया। इस पहल में **कम लागत** वाली भूजल पुनर्भरण और जल भंडारण संरचनाओं के निर्माण को बढ़ावा दिया गया। साथ ही, बंद पड़े बोरवेलों को **पुनः चालू करने** तथा **स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल** समाधान अपनाने में भी सहयोग दिया गया। इन संरचनाओं का विकास 'संपूर्ण सरकार' और 'संपूर्ण समाज' के दृष्टिकोण से किया गया। इस अभियान के दौरान **10 लाख** से अधिक भूजल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण किया गया, जबकि **27 लाख** से अधिक कृत्रिम पुनर्भरण संरचनाओं की सूचना दी गई।

जल संचय जन भागीदारी 2.0 (2025)

- 1 जून 2025 को शुरू की गई जल संचय जन भागीदारी 2.0 ने पिछली पहल को आगे बढ़ाया। इसका विशेष ध्यान अति-दोहित और गंभीर श्रेणी के जिलों में भूजल पुनर्भरण पर केन्द्रित रहा। इस पहल में कम लागत वाले और अति-स्थानीय स्तर पर लागू किए जा सकने वाले उपायों पर जोर दिया गया। नवम्बर 2025 में छठे राष्ट्रीय जल पुरस्कार समारोह के दौरान जेएसजेबी 1.0 के तहत किए गए उत्कृष्ट योगदानों को सम्मानित किया गया।



जल संचय जन भागीदारी पहल का प्रभाव मूल्यांकन एवं उपलब्धियां

- जल संचय जन भागीदारी (जेएसजेबी) पहल के तहत **1.55 करोड़ से अधिक कृत्रिम भूजल पुनर्भरण एवं जल भंडारण संरचनाओं** का निर्माण किया गया है। इसके अतिरिक्त, जेएसजेबी 1.0 का प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन किया गया, जिसमें 1 जून 2025 से 31 दिसम्बर 2025 के बीच के वर्षा संबंधी आंकड़ों का उपयोग करते हुए **23 लाख संरचनाओं** का मूल्यांकन किया गया। अध्ययन में अनुमान लगाया गया कि इन प्रयासों के परिणामस्वरूप **2.43 अरब घन मीटर भूजल का पुनर्भरण** हुआ है।

जल संचय जन भागीदारी: कैच द रेन (जेएसजेबी: सीटीआर) (2026)

- 1 जून 2026 को शुरू की गई इस पहल ने **जल शक्ति अभियान : कैच द रेन (वर्षा जल संचयन अभियान) के साथ जोड़कर** जेएसजेबी के दृष्टिकोण का विस्तार किया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण, जल संरक्षण, जल परिसंपत्तियों का निर्माण और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना था। इसमें स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल कम लागत वाले उपायों को प्रोत्साहित किया गया तथा सतत जल प्रबंधन के माध्यम से **जलवायु सतत जल प्रबंधन के माध्यम से जलवायु लचीलेपन को** मजबूत किया गया।
- इस अभियान में वीबी-जी आरएएम जी, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) के तहत 'पर ड्रॉप मोर क्रॉप', पीएमकेएसवाई के अंतर्गत जल निकायों की मरम्मत, नवीनीकरण एवं पुनर्स्थापन, सीएएमपीए, वित्त आयोग अनुदान तथा राज्य सरकारों की अन्य योजनाओं जैसी विभिन्न सरकारी योजनाओं के बीच तालमेल का लाभ उठाया गया। इस पहल के तहत पंचायती राज संस्थाओं, शहरी स्थानीय निकायों, महिला समूहों, युवाओं, शैक्षणिक संस्थानों, नागरिक समाज संगठनों और स्थानीय समुदायों को एक साथ जोड़ा गया। ये हितधारक **योजना निर्माण, कार्यान्वयन और समुदाय के नेतृत्व में जल संरक्षण** को बढ़ावा देने में सहयोग करते हैं। **जेएसजेबी : सीटीआर पोर्टल और मोबाइल एप्लिकेशन** ने पारदर्शिता को मजबूत बनाने, निगरानी करने तथा जन प्रतिक्रिया प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जल शक्ति अभियान: कैच द रेन (जेएसए: सीटीआर)

- जल शक्ति अभियान : कैच द रेन की शुरुआत **22 मार्च 2021** को **विश्व जल दिवस** के अवसर पर की गई थी। इसका मार्गदर्शक विषय था : "कैच द रेन, व्हेयर इट फॉल्स, व्हेन इट फॉल्स" (वर्षा जल को वहीं और उसी समय संचित करें, जहां और जब वह गिरता है)। यह अभियान **जल शक्ति अभियान 2019** की सफलता पर आधारित है, जिसके तहत वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देने के लिए 256 जिलों के 1,592 जल-संकटग्रस्त ब्लॉकों को शामिल किया गया था। इस अभियान में जन आंदोलन के दृष्टिकोण के माध्यम से भूजल पुनर्भरण, जलग्रहण क्षेत्र का विकास, जल निकायों का पुनरुद्धार, वनीकरण और सामुदायिक भागीदारी को भी बढ़ावा दिया गया। तब से यह **अभियान बदलती विषयवस्तु और प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के साथ प्रतिवर्ष लागू** किया जा रहा है

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims Practice Questions)

प्रश्न 1: 'कैच द रेन' (Catch the Rain) अभियान के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह एक राष्ट्रव्यापी अभियान है जो मुख्य रूप से वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण और जल निकायों के पुनरुद्धार पर केंद्रित है।
2. यह अभियान केवल सरकारी संस्थाओं तक सीमित है और इसमें आम समुदायों की कोई भागीदारी नहीं होती है।
3. इसके तहत मानसून के दौरान अधिकतम जल संचयन सुनिश्चित करने के लिए तालाबों और जलाशयों की सफाई को बढ़ावा दिया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 3
- (B) केवल 2
- (C) केवल 1 और 2
- (D) 1, 2 और 3

मुख्य परीक्षा (Mains Practice Question)

- *"जल सुरक्षा किसी भी राष्ट्र के सतत विकास की धुरी है। 'कैच द रेन' (बारिश का पानी जमा करें) जैसे राष्ट्रव्यापी अभियान किस प्रकार पारंपरिक जल स्रोतों के पुनरुद्धार, भूजल पुनर्भरण और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से भारत में जल संकट का समाधान करने में सहायक हो सकते हैं? विस्तार से चर्चा कीजिए।"*
  (250 शब्द, 15 अंक)

महत्वपूर्ण तथ्य

SEM

What are the powers of Special Executive Magistrates?

Who appoints SEMs? Can they conduct criminal trials or convict people? Can they grant judicial custody?

Rizmi Lia M.

The story so far:

A Special Executive Magistrate (SEM) court in Delhi accepted the sureties and granted bail to Cockroach Janta Party (CJP) activists Saurav Das and Ashutosh Ranka last Wednesday.

Despite the Delhi Police seeking a three-day extension of custody, Assistant Commissioner of Police Ritu Raj, who presided over the proceedings, ordered their release. CJP activists had challenged the legality of their continued detention. The case has brought into focus the roles and powers of SEMs and their differences from Judicial Magistrates.

Who is Special Executive Magistrate?

State governments appoint SEMs for specific areas or purposes and give them the powers exercised by the Executive Magistrates under Section 15 of the Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita (BNSS), 2023.

While Executive Magistrates perform continued administrative and preventive functions, SEMs are appointed for a specified period, area or function, such as particular situations that require preventive action or maintenance of public order. Their powers also depend on the authority conferred upon them by the State government.

What is the function of SEMs?

The powers of SEMs are intended to allow authorities to intervene when there is a likelihood of disturbance, rather than responding after the offence has occurred. They maintain public order and prevent breaches of peace by performing preventive and administrative functions.

The Executive Magistrate can require a person who is likely to cause a breach of peace or disturb public tranquility, to show cause as to why they should not execute a bond to keep the peace. So, depending on the circumstances, they may be required to furnish a bond for a specified period. It is subject to the procedure established by law. This is dealt with under Section 126 of the BNSS.

Executive Magistrates can also issue urgent orders in case of nuisance or apprehended danger. It is likely to prevent, or tends to prevent, obstruction, or injury to any person lawfully employed, or danger to human life or safety or a disturbance of the public tranquillity, or a riot, or an affray.

Preventive arrest can be made by police officers when necessary to prevent the commission of a cognisable offence that cannot otherwise be prevented, according to Section 170 of the BNSS. This is a police power, not exclusively that of SEMs.

The police initiated a preventive proceeding against the CJP activists, alleging that they had breached peace bonds they had signed. The SEM extended their custody on October 19, citing concerns about public peace. Later on Wednesday, their sureties were accepted, and they were released on an undertaking that they would not call for any protest at Jantar Mantar while it remained a denotified protest site.

The proceedings before the SEM primarily concerned only the alleged violation of a signed peace bond and not the criminal cases registered over the October 13 Jantar Mantar incident.

What is a peace bond?

Section 126 of the BNSS allows an Executive Magistrate to require a person to execute a peace bond for up to one year to prevent breach of peace.

According to Section 135, the Magistrate conducts an inquiry into the information received. In certain circumstances, they can also order a person to provide security while the inquiry is pending and record the reasons in writing. In case of a breach of a peace bond, the Magistrate may order that the person be arrested or detained for the remaining period of the bond. This is dealt with under section 141(1)b.

In the present case, the SEM proceedings concern allegations that Mr. Das and Mr. Ranka breached their earlier peace bond through actions at the Jantar Mantar.

How are SEMs different from Judicial Magistrates?

Section 9 of the BNSS provides for the establishment of courts of Judicial magistrates of the first and second classes. For that, the State government determines the number and location of these courts. Presiding officers are also appointed by the High Court.

Judicial Magistrates form part of the judicial system and deal with criminal cases, including remand proceedings, bail applications and trials. They are independent and impose sentences permitted by law.

SEMs are limited to administrative functions and cannot conduct criminal trials or convict people through these proceedings. They are also authorised to release or grant police or judicial remand.

Can the actions of SEMs be reviewed by courts?

Yes, SEMs' actions are subject to judicial review and administrative oversight to ensure legality and the protection of the rights of citizens.

Their order can also be challenged before the appropriate court or authority depending on the nature of the order and remedy available.

YouTube Homework

- BNSS Section 47, 48, 58, 156, 187, 356

173(1)(y)

SEM
BNSS-
→ 15
→ 126
→ 127

JM
BNSS- 9

महत्वपूर्ण तथ्य

विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेटों (SEMs) की शक्तियाँ क्या हैं?

- **एसईएम की नियुक्ति कौन करता है? क्या वे आपराधिक मुकदमों की सुनवाई कर सकते हैं या लोगों को दोषी ठहरा सकते हैं? क्या वे न्यायिक हिरासत दे सकते हैं?**
- बुधवार को दिल्ली में एक विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट (SEM) अदालत ने मुचियों (ज़मानतदारों) को स्वीकार कर लिया और कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) के कार्यकर्ताओं सौरव दास और आशुतोष रंका को जमानत दे दी.
- दिल्ली पुलिस द्वारा हिरासत को तीन दिन और बढ़ाने का अनुरोध किए जाने के बावजूद, एसीपी रितु राज, जो कार्यवाही की अध्यक्षता कर रहे थे, ने उनकी रिहाई का आदेश दिया. सीजेपी कार्यकर्ताओं ने उनकी निरंतर हिरासत की वैधता को चुनौती दी थी. इस मामले ने न्यायिक मजिस्ट्रेटों से एसईएम की भूमिकाओं और उनकी भिन्नताओं पर ध्यान केंद्रित किया है.

विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट कौन होता है?

- राज्य सरकारें विशिष्ट क्षेत्रों या उद्देश्यों के लिए एसईएम नियुक्त करती हैं और उन्हें वे शक्तियां देती हैं जिनका प्रयोग कार्यकारी मजिस्ट्रेट भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS), 2023 की धारा 15 के तहत करते हैं।
- जबकि कार्यकारी मजिस्ट्रेट लगातार प्रशासनिक और निवारक कार्य करते हैं, एसईएम को एक निश्चित अवधि, क्षेत्र या कार्य के लिए नियुक्त किया जाता है, जैसे कि विशेष स्थितियां जिनमें निवारक कार्रवाई या सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने की आवश्यकता होती है। उनकी शक्तियां राज्य सरकार द्वारा उन्हें प्रदत्त अधिकार पर भी निर्भर करती हैं।

एसईएम का कार्य क्या है?

- एसईएम की शक्तियों का उद्देश्य अधिकारियों को अपराध होने के बाद प्रतिक्रिया देने के बजाय गड़बड़ी की संभावना होने पर हस्तक्षेप करने की अनुमति देना है। वे निवारक और प्रशासनिक कार्य करके सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखते हैं और शांति भंग होने से रोकते हैं।
- कार्यकारी मजिस्ट्रेट ऐसे व्यक्ति से शांति भंग होने की आशंका होने पर शांति बनाए रखने के लिए बॉन्ड निष्पादित (execute) करने का कारण बताओ नोटिस जारी करने की मांग कर सकता है। इसलिए, परिस्थितियों के आधार पर, उन्हें एक निश्चित अवधि के लिए बॉन्ड प्रस्तुत करने की आवश्यकता हो सकती है। यह कानून की स्थापित प्रक्रिया के अधीन है। यह बीएनएसएस की धारा 126 के अंतर्गत आता है।
- कार्यकारी मजिस्ट्रेट उपद्रव या आसन्न खतरे के मामले में तत्काल आदेश भी जारी कर सकता है। यह किसी ऐसे व्यक्ति को रोकने, या रोकने की प्रवृत्ति रखने, बाधा डालने, या किसी को कानूनी रूप से नियोजित चोट पहुँचाने, या मानव जीवन या सुरक्षा को खतरे या सार्वजनिक शांति में खलल, दंगा, या झगड़े को रोकने की संभावना रखता है।
- बीएनएसएस की धारा 170 के अनुसार, संज्ञेय अपराध के आयोग को रोकने के लिए जब आवश्यक हो, पुलिस अधिकारियों द्वारा निवारक गिरफ्तारी की जा सकती है जिसे अन्यथा रोका नहीं जा सकता है। यह एक पुलिस शक्ति है, विशेष रूप से एसईएम की नहीं।

महत्वपूर्ण तथ्य

- पुलिस ने सीजेपी कार्यकर्ताओं के खिलाफ एक निवारक कार्यवाही शुरू की, जिसमें आरोप लगाया गया कि उन्होंने अपने द्वारा हस्ताक्षरित शांति बॉन्ड का उल्लंघन किया है। एसईएम ने 19 अक्टूबर को उनकी हिरासत बढ़ा दी, जिसमें सार्वजनिक शांति को लेकर चिंता जताई गई। बाद में बुधवार को, उनके मुचियों को स्वीकार कर लिया गया, और इस मुचके पर रिहाई दे दी गई कि वे जंतर-मंतर पर किसी भी विरोध प्रदर्शन का आह्वान नहीं करेंगे, जबकि यह एक गैर-अधिसूचित विरोध स्थल बना रहा।
- एसईएम के समक्ष कार्यवाही मुख्य रूप से एक हस्ताक्षरित शांति बॉन्ड के कथित उल्लंघन से संबंधित थी और न कि 13 अक्टूबर की जंतर-मंतर की घटना पर दर्ज आपराधिक मामलों से।

शांति बॉन्ड (Peace Bond) क्या है?

- बीएनएसएस की धारा 126 एक कार्यकारी मजिस्ट्रेट को शांति भंग को रोकने के लिए किसी व्यक्ति को एक वर्ष तक का शांति बॉन्ड निष्पादित करने की आवश्यकता की अनुमति देती है।
- धारा 135 के अनुसार, मजिस्ट्रेट प्राप्त जानकारी की जांच करता है। कुछ परिस्थितियों में, वह जांच लंबित रहने के दौरान सुरक्षा प्रदान करने के लिए किसी व्यक्ति को आदेश भी दे सकता है और कारणों को लिखित रूप में दर्ज कर सकता है। शांति बॉन्ड के उल्लंघन के मामले में, मजिस्ट्रेट यह आदेश दे सकता है कि बॉन्ड की शेष अवधि के लिए व्यक्ति को गिरफ्तार किया जाए या हिरासत में लिया जाए। इसे धारा 141(1)b के तहत निपटाया जाता है।
- वर्तमान मामले में, एसईएम की कार्यवाही इस आरोप से संबंधित है कि श्री दास और श्री रंका ने जंतर-मंतर पर अपने कार्यों के माध्यम से अपने पहले के शांति बॉन्ड का उल्लंघन किया है।

एसईएम न्यायिक मजिस्ट्रेटों से किस प्रकार भिन्न हैं?

- बीएनएसएस की धारा 9 प्रथम और द्वितीय श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेटों की अदालतों की स्थापना का प्रावधान करती है। उसके लिए, राज्य सरकार इन अदालतों की संख्या और स्थान निर्धारित करती है। पीठासीन अधिकारियों की नियुक्ति भी उच्च न्यायालय द्वारा की जाती है।
- न्यायिक मजिस्ट्रेट न्यायिक प्रणाली का हिस्सा हैं और रिमांड कार्यवाही, जमानत आवेदनों और मुकदमों सहित आपराधिक मामलों से निपटते हैं। वे स्वतंत्र होते हैं और कानून द्वारा अनुमति प्राप्त सजा देते हैं।
- एसईएम प्रशासनिक कार्यों तक सीमित हैं और इन कार्यवाही के माध्यम से आपराधिक मुकदमे नहीं चला सकते हैं या लोगों को दोषी नहीं ठहरा सकते हैं। वे पुलिस या न्यायिक रिमांड देने या जारी करने के लिए भी अधिकृत नहीं हैं।

क्या अदालतों द्वारा एसईएम के कार्यों की समीक्षा की जा सकती है?

- हाँ, वैधता और नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एसईएम के कार्य न्यायिक समीक्षा और प्रशासनिक oversight के अधीन हैं।
- आदेश और उपलब्ध उपाय की प्रकृति के आधार पर उनके आदेश को उचित अदालत या प्राधिकरण के समक्ष भी चुनौती दी जा सकती है।

महत्वपूर्ण तथ्य



CACHE

A costly hassle: Consumers such as time-pressed workers, minors, vulnerable adults, senior citizens, and non-literate customers face extra hurdles when struggling to offload unwanted subscriptions. GETTY IMAGES

What is the significance of New York City's 'Click to Cancel' rule?

The 'Click to Cancel' rule aims to enable residents to cancel any subscription just as quickly as they can sign up — ideally with a single click. It covers subscriptions for goods or services that meet the definitions of 'automatic renewal' or 'continuous service offer'

Sahana Venugopal

On October 1, New York City Mayor Zohran Mamdani announced the enforcement of the city's 'Click to Cancel' rule that essentially lets residents cancel any subscription just as quickly as they can sign up – ideally with a single click.

"No one should need 45 minutes of hold music to stop paying for something they never wanted," said Mr. Mamdani. "If a company can take your money with one click, you should be able to get your money back with one click."

What is the need for a 'Click to Cancel' rule?

It can feel effortless to sign up online for a gym membership, a grocery subscription, a mobile phone plan, or a magazine delivery. When one wants to cancel the same service, however, the process is often so convoluted and time-consuming that customers end up keeping a subscription that they would prefer to eliminate.

This unethical retention is commonly achieved through digital "dark patterns" that make it hard for customers to act in their own best interests. For example, subscription cancellation or account deletion buttons might be obscured by multiple menus and sub-menus designed to confuse users. Or, they may require the user to "click" through pages and pages of text, wasting their time and making them likely to give up.

Sometimes, customers may not even know that they are locked into a subscription, as a free trial is converted into a paid commitment without clearly seeking consent.

Alternatively, many merchants who allow easy online subscriptions, arbitrarily require buyers to send personalised emails or letters, spend time on the phone, or even visit the business in person just to end their subscription.

This lack of parity ends up keeping reluctant customers locked into bad services.

Consumers such as time-pressed workers, minors, vulnerable adults, senior citizens, and non-literate customers face extra hurdles when struggling to offload unwanted subscriptions. In extreme cases, customers may even have to cancel their credit cards and get new ones in order to end a subscription.

The problem is so pervasive that media outlets have reported that people are resorting to AI agents – such as Meta's Muse – in order to identify and get rid of unnecessary subscriptions on their behalf.

'Click to Cancel' rules would force sellers to make cancellation processes easier, quicker, transparent, fairer, and customer-friendly, so that buyers don't need to depend on external tools and services.

As per one estimate cited by the NYC Mayor's office, the 'Click to Cancel' rule could save New Yorkers up to $862.5 million per year.

Who is covered by the 'Click to Cancel' rule?

The rule gives the Department of Consumer and Worker Protection (DCWP) citywide authority for enforcement, adding on to the New York state's existing regulations that govern subscription terms. The 'Click to Cancel' rule covers subscriptions for any type of goods or services meeting the definitions of "automatic renewal" or "continuous service offer," with exceptions for government-linked businesses and several licensed financial institutions.

"A person making an automatic renewal or continuous service offer to a consumer must provide the consumer with the option to cancel at any time using a simple cancellation mechanism that is as easy to use as the mechanism that the consumer used to provide consent and that is through the same medium that the consumer used to provide consent," stated the 'Click to Cancel' rule.

For example, an internet-based sign-up process cannot require a call-based or in-person cancellation process. New York City residents can also file complaints in order to seek mediation, while companies could face civil penalties starting at $525 for violations.

Does India have a 'Click to Cancel' policy?

India has a bank-based regulation that is meant to protect customers from deceptive subscription practices. Even so, the reality is that many consumers are often manipulated by the merchants that they rely on for their daily needs.

Take the Reserve Bank of India's 'Digital Payments - E-mandate Framework' from this April. It directs an issuer (of a mandate/recurring transaction) to send a pre-transaction notification to the customer at least 24 hours prior to the actual charge/debit. The issuer must share the merchant's name, transaction amount, date/time of debit, reference number of the e-mandate, and the reason for the debit. A post-transaction notification to the customer is also required.

In other words, merchants cannot silently deduct funds from customers' accounts and hope that they don't notice. However, a lack of regulation targeting "dark patterns" creates avenues for Indian consumers to be exploited by merchants.

According to Datum Intelligence's Dark Patterns Consumer Perception Study dated June 2026, e-commerce platforms Nykaa, Myntra, Flipkart, and Amazon, as well as quick commerce platforms Big Basket, Zepto, Swiggy Instamart, and Blinkit did not offer pre-renewal reminders for free trial billing. The study further noted that cancellation required more than 4 steps on most of the listed platforms.

In essence, Indian shoppers are far from being able to click to cancel.

YouTube Homework

- Right to be Forgotten

महत्वपूर्ण तथ्य

- **'क्लिक टू कैंसिल' नियम क्या है?** यह न्यूयॉर्क सिटी का एक नियम है जिसका उद्देश्य निवासियों को किसी भी सब्सक्रिप्शन को उतनी ही आसानी से (आदर्श रूप से एक क्लिक में) रद्द करने की अनुमति देना है, जितनी आसानी से उन्होंने इसके लिए साइन अप किया था।
- **इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी?** अक्सर कंपनियां ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन लेना तो बहुत आसान बना देती हैं, लेकिन रद्द करने की प्रक्रिया को बेहद जटिल, भ्रमित करने वाला और समय लेने वाला (जैसे 'डार्क पैटर्न' का उपयोग) बना देती हैं, जिससे ग्राहकों को अनचाहे सब्सक्रिप्शन जारी रखने पड़ते हैं।
- **यह नियम किसे कवर करता है?** यह नियम "स्वचालित नवीनीकरण" (automatic renewal) या "निरंतर सेवा" (continuous service) वाले सामानों या सेवाओं के सभी सब्सक्रिप्शन पर लागू होता है। इसका उल्लंघन करने पर कंपनियों पर भारी जुर्माना (शुरुआत में $525 प्रति उल्लंघन) लग सकता है।
- **क्या भारत में ऐसा कोई नियम है?** भारत में 'क्लिक टू कैंसिल' जैसा कोई सीधा नियम नहीं है, हालांकि भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के 'डिजिटल पेमेंट-ई-मैंडेट फ्रेमवर्क' के तहत ग्राहकों को ऑटो-डेबिट से पहले सूचना देना अनिवार्य है। इसके बावजूद, भारत में ई-कॉमर्स और क्विक-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर अनचाहे सब्सक्रिप्शन रद्द करना अभी भी एक बड़ी चुनौती है।

महत्वपूर्ण तथ्य

Bid to restrain functioning of CEC against law: ECI to SC

Krishnadas Rajagopal
NEW DELHI

The Election Commission of India (ECI), Chief Election Commissioner (CEC) Gyanesh Kumar, and the two Election Commissioners (ECs) have filed a joint affidavit highlighting that any attempt to restrain the functioning of the CEC will be contrary to the law.

The nearly 250-page document, filed in the top court late on Monday, said a CEC cannot be removed from office except in the manner and the grounds identical to ousting a Supreme Court judge.

The affidavit said a media report on the inner frictions and alleged unilateral or authoritarian functioning of the CEC was hardly evidence in court. Petitions basing itself on media reports should not be even maintainable in court.

Petitioners who have challenged the functioning of the CEC include the Leader of the Opposition in the Lok Sabha and other INDIA bloc leaders. The affidavit, which shows the CEC to be on the same page as both ECs Sukhbir Singh Sandhu and Vivek Joshi, said the commission had "neither released nor authorised the release of any internal note or file to any news agency".

'Rule of majority'

They submitted the multi-member Commission, in case of any "difference of opinion" would follow the rule of majority to arrive at decisions in accordance with Section 18 of the Chief Election Commissioner and Other Election Commissioners (Appointment, Conditions of Service and Term of Office) Act, 2023.

The affidavit indicated that there was no room for unilateral decision making in the ECI. Decisions were vetted at various levels.

> Decisions are first sent to one Election Commissioner and then to the other Election Commissioner and then finally to the CEC. Such approved decisions of the EC are duly noted in the files concerned of the EC and bear the signature of the Election Commissioners and the CEC. Thereafter, the decision is notified and implemented by the EC Secretariat
>
> **ECI AFFIDAVIT IN SC**

"Decisions are first sent to one Election Commissioner and then to the other Election Commissioner and then finally to the CEC. Such approved decisions of the EC are duly noted in the files concerned of the EC and bear the signature of the ECs and the CEC. Thereafter, the decision is notified and implemented by the EC Secretariat," the affidavit said.

However, the ECI concedes in the affidavit that "when it is not feasible for the CEC or any of the ECs to be available in person", an approval of the members of the ECI is obtained through "electronic means" and recorded later in the official file.

"Important functions" were "directly under the Commission as a whole". "Decisions taken in meetings of the EC or are noted in files bear the signatures of the ECs and the CEC," the affidavit said.

An office order was issued on July 28, by an IAS officer of the rank of additional secretary, who had been posted on deputation to the EC, pertaining to internal work allocation.

The affidavit, however, indirectly confirmed that Mr. Sandhu and Mr. Joshi had written to the Cabinet Secretary about the conduct of Senior Deputy Election Commissioner Maneesh Garg, following a controversial July 28 order affecting levels of IT oversight over electoral rolls. The order was passed without the knowledge or consensus of the two ECs.

'No change in Form 6'

"On July 29, the two ECs had written separate letters to the Cabinet Secretary in relation to this order and the conduct of the officer," the affidavit said. It said that the July 28 order was "never implemented".

The ECI denied allegations that Form 6 was amended in consecutive special intensive revision (SIR) orders of June 24, 2025; October 27, 2025; and May 14, 2026. It reasoned that the additional declaration form requiring voters to provide details of mapping was "not part of Form 6, which is the statutory form for inclusion in the electoral roll".

"The declaration form is one of the documents which is required to be submitted by any applicant along with Form 6 for inclusion in the electoral roll during the SIR exercise," it said.

The poll body said that the "mapping concept" in the additional declaration form only obviated the need for submitting further documents for verification. It was only a "measure taken for the assistance of voters".

"There is no change in the Form 6," it said.

- BNSS Section 163
- Article 19 (1)
- Article 19 (3)
- Article 20
- Article 21
- Article 22
- ECI
- CEC – EC's
- SIR
- RPA 1950 – 21(3)
- RPA 1950 – 28 (RER-1960 - 6,7,8)
- RPA 1951 - 29(A)
- Conduct of Election Rules 1961 – 4(A) – Form 26

महत्वपूर्ण तथ्य

Centre approves defence deals worth ₹2.12 lakh cr.

Approvals cover a wide range of platforms, weapons and surveillance systems for the Army, Navy and Air Force; 82% of the total procurement value has been earmarked for the domestic industry

The Hindu Bureau
NEW DELHI



For the IAF, approvals were accorded for helicopters, air defence systems to strengthen its war-fighting capabilities. MURALI KUMAR K.

The Defence Acquisition Council, or DAC, chaired by Defence Minister Rajnath Singh, on Monday accorded Acceptance of Necessity (AoN) for capital acquisition proposals worth approximately ₹2.12 lakh crore for the three Services, with about 82% of the procurements to be sourced from the domestic industry.

According to the Ministry of Defence, the approvals cover a wide range of military platforms, weapons and surveillance systems aimed at enhancing the operational capabilities, mobility and combat preparedness of the Army, Navy and Air Force.

For the Indian Army, the DAC cleared procurement of high mobility vehicles (HMVs), self-propelled tracked gun systems, gun shot response systems (GSRSs), light multi-role helicopters (LMRHs), very short-range air defence systems (VSHORADS), platform-based counter-unmanned aerial systems (C-UAS), long-range unmanned aerial systems, surveillance UAVs, integrated surveillance and strike systems, and long-range kamikaze drones.

Logistics boost

The HMVs are expected to strengthen logistics and mobility, while the self-propelled tracked gun systems will provide mechanised formations with matching mobility and firepower. The GSRS will act as a force multiplier by providing real-time situational awareness. The LMRHs will be used by the Army and the Air Force for reconnaissance and surveillance, combat operations, search and rescue, and humanitarian assistance and disaster relief missions.

The VSHORADS will enhance the Army's capability to engage emerging small-sized aerial threats, while the platform-based C-UAS will improve the survivability of tanks on the modern battlefield. The surveillance and drone systems are expected to strengthen the Army's reconnaissance, surveillance and targeting capabilities.

For the Navy, the council accorded AoN for the procurement of Active Offboard Decoy Systems (AODS) and other major naval platforms. The AODS will strengthen the Navy's anti-missile defence capabilities. The indigenously designed and constructed naval platforms will incorporate modern warfare capabilities and enhance the Navy's overall combat potential.

Approvals for IAF

For the Air Force, approvals were accorded for helicopters, air defence systems, weapons and mobile x-band doppler weather radar systems to strengthen its air defence and war-fighting capabilities. The procurement of special utility helicopters will address the IAF's transport requirements, while the radar systems will provide high-resolution, localised weather surveillance.

The DAC's approvals are expected to provide a significant boost to domestic defence manufacturing, with nearly 82% of the total procurement value earmarked for domestic industry.

Defence technology
↓↓
Defence ministry
↓↓
DAC
↓↓
2 12 Lakh Crore

- HMVs
- GSRS
- LMRHs
- VSHORADS
- C-UAS

DAC ?? (??)

YouTube Homework

महत्वपूर्ण तथ्य

Parliaments have a vital duty to listen to concerns of youth, says Om Birla

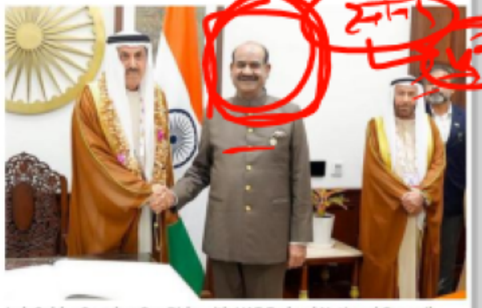
The Hindu Bureau
NEW DELHI

Parliaments have a vital responsibility to listen to young people and understand their hopes and concerns, Lok Sabha Speaker Om Birla said at the inaugural session of the 12th BRICS Parliamentary Forum at the Samvidhan Sadan here on Monday.

Mr. Birla said the youth today have growing access to quality education and technological knowledge, along with a strong desire to innovate, excel, and contribute to society.

"The aspirations of the youth must be met with meaningful opportunities, dignity, and an enabling environment in which their talents can flourish," he said, adding that empowering young people was not only an investment in their future but also a commitment to the collective destiny of nations.

Mr. Birla said the world was passing through a period of "profound uncertainty", marked by regional conflicts, economic instability, and climate change, whose consequences transcended borders. He stressed the need for a "spirit of collective responsibility" in addressing these challenges.



Lok Sabha Speaker Om Birla with UAE Federal National Council Speaker Saqr Ghobash in New Delhi. PTI

"Parliaments, as vibrant expressions of the people's will, can serve as bridges of understanding, strengthen mutual confidence, ease international tensions, and help advance peaceful and constructive responses to global challenges," he said.

Referring to Prime Minister Narendra Modi's vision of transforming BRICS into an "ecosystem of solutions", Mr. Birla said the true measure of the forum's success would lie not in the breadth of its discussions but in the depth of its outcomes and their impact on people's lives. He called on parliaments of member countries to work towards a shared future, ensuring that dialogue translated into action.

Mr. Modi interacted with the delegations after the inaugural session, officials said. External Affairs Minister S. Jaishankar, Congress MP Shashi Tharoor and other Indian parliamentarians also met the visiting delegates from BRICS member and partner countries. The member countries participating in the two-day forum are Brazil, Russia, China, Egypt, the UAE, and Iran. Partner countries attending the meeting include Belarus, Cuba, Thailand, Uganda, Vietnam, Uzbekistan, and Kazakhstan.

12वां ब्रिक्स संसदीय मंच (12th BRICS Parliamentary Forum) का आयोजन 26 और 27 अक्टूबर 2026 को नई दिल्ली, भारत में होना तय हुआ है।

इस आयोजन से जुड़ी मुख्य जानकारियां निम्नलिखित हैं:

- **तिथि:** यह दो दिवसीय सम्मेलन **26 और 27 अक्टूबर 2026** को आयोजित किया जा रहा है।
- **स्थान:** इसका आयोजन नई दिल्ली में संसद भवन परिसर के ऐतिहासिक केंद्रीय कक्ष (**संविधान सदन**) में किया जा रहा है।
- **मुख्य थीम:** इस बार इस मंच का मुख्य विषय **"जन-केंद्रित विकास हेतु संसदों का सुदृढ़ीकरण"** (Fostering Parliaments for People-Centric Development) रखा गया है। Press Information ... +3

YouTube Homework

- BRICS = ??
  - भारत की अध्यक्षता

महत्वपूर्ण तथ्य

Rajnath to lead Indian delegation at ASEAN meet in Philippines

Saurabh Trivedi
NEW DELHI

Defence Minister Rajnath Singh will lead the Indian delegation at the 13th ASEAN Defence Ministers' Meeting (ADMM)-Plus in Cebu, Philippines, from October 28 to 29, where he is scheduled to address the forum on regional and international security issues.

On the sidelines of the meeting, Mr. Singh is expected to hold bilateral discussions with his counterparts from participating countries to review ongoing defence cooperation and explore avenues for further strengthening strategic partnerships, the Defence Ministry said.

The ADMM-Plus is a key regional platform for dialogue and cooperation on defence and security issues, bringing together the 11 ASEAN member-states and eight Dialogue Partners – India, the U.S., China, Russia, Japan, South Korea, Australia and New Zealand.

The meeting will provide an opportunity for countries to exchange views on the evolving regional and international security environment and discuss ways to strengthen defence cooperation.

The Philippines is chairing the ADMM-Plus in 2026. India, meanwhile, is co-chairing the Experts Working Group on Counter-Terrorism with Malaysia for the 2024-2027 cycle.

ASEAN

ASEAN Defence Ministers Meeting - Plus

13th ASEAN Defence Ministers Meeting - Plus

28-29 oct 2026

Cebu - Philippines

ASEAN 11

8

USA
Russia
China
India
SK
AN Z

YouTube Homework

- ASEAN

महत्वपूर्ण तथ्य

Violence marks shutdown against proposed dam in Arunachal Pradesh

Rahul Karmakar
GUWAHATI

Violence during a 12-hour shutdown paralysed parts of Arunachal Pradesh's Upper Subansiri district on Monday, leading to the cancellation of a public hearing on the proposed 1,605-megawatt Subansiri Upper Hydroelectric Project, also known as the Menga Dam.

Several student and community-based organisations, led by the All Tagin Students' Union (ATSU), called the shutdown. The alleged attempt by the police to detain ATSU president Tadak Pakba late on Saturday night was among the triggers for the protest.

A district official, declining to be quoted, said the shutdown was marked by arson, vandalism and clashes with the police. Much of the violence was concentrated in Daporijo, the headquarters of Upper Subansiri district, which has been in the news over alleged incursions by Chinese soldiers.



Villagers along the river belt protesting against the project in Siang district of Arunachal Pradesh. FILE PHOTO

Videos shared on social media appear to show a private vehicle being set on fire, a police vehicle being damaged and overturned, and some two-wheelers being damaged. Protesters also reportedly damaged or burnt equipment, computer peripherals and surveying instruments at an office associated with National Hydroelectric Power Corporation, which is pursuing the project.

The protesters demanded the withdrawal of the proposed project on the Subansiri River, citing concerns over its environmental impacts, livelihoods, indigenous rights and the interests of affected communities.

Second stir in 48 hours

The agitation against the Subansiri project followed a similar protest on October 24 against the pre-feasibility study for the proposed 11,200-MW Siang Upper Multipurpose Project in the Siang River valley. Pasighat, the headquarters of East Siang district, was the epicentre of that protest.

Locals, mostly belonging to the Adi community, are against the Siang project, fearing large-scale displacement and adverse environmental consequences. The Centre, however, considers the project necessary to counter a 60,000-MW hydropower project that China is building upstream on the Yarlung Tsangpo, the river that enters India from Tibet as the Siang and meets Dibang and Lohit rivers downstream to form the Brahmaputra.

The Centre ordered the deployment of two additional companies of the Rapid Action Force after the Pasighat violence, in which four women experienced tear gas-induced problems and a few security personnel were injured in stone-pelting.

महत्वपूर्ण तथ्य

Menga Dam

- Subansiri Upper Hydroelectric Project (SUHEP) अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी सुबनसिरी जिले में सुबनसिरी नदी (Subansiri River) पर बनाया जा रहा है। सुबनसिरी नदी, ब्रह्मपुत्र नदी की सबसे बड़ी सहायक नदियों में से एक है। इस मेगा प्रोजेक्ट को भारत सरकार की कंपनी NHPC (नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन) द्वारा विकसित किया जा रहा है और इसकी कुल प्रस्तावित क्षमता 1,605 मेगावाट है।
- इस प्रोजेक्ट, इसके विवादों और इसके पीछे की रणनीतिक वजहों की पूरी जानकारी नीचे दी गई है:

1. इसको लेकर क्या Conflict (विवाद) है?

- स्थानीय स्तर पर इस प्रोजेक्ट का भारी विरोध हो रहा है। हाल ही में अक्टूबर 2026 में, 'ऑल तागिन स्टूडेंट्स यूनियन' (ATSU) और अन्य स्थानीय समुदायों ने इस प्रोजेक्ट के खिलाफ 12 घंटे का हिंसक बंद बुलाया, जिसके कारण प्रशासन को इसकी पब्लिक हियरिंग (जनसुनवाई) तक रद्द करनी पड़ी।

मुख्य विवाद इन वजहों से है:

- विस्थापन और जमीन का नुकसान: स्थानीय जनजातियों (जैसे तागिन समुदाय) को डर है कि बांध के विशाल जलाशय (Reservoir) के कारण उनके 35 से अधिक पैतृक गांव, रिहायशी इलाके और उपजाऊ धान के खेत पूरी तरह डूब जाएंगे।
- सांस्कृतिक और आजीविका का खतरा: स्थानीय लोगों का नदी और वहां की प्रकृति के साथ सदियों पुराना सांस्कृतिक जुड़ाव है। बांध बनने से उनके पारंपरिक आजीविका के साधन (खेती और मछली पालन) छिन जाएंगे।
- पर्यावरणीय नुकसान: रिपोर्ट के मुताबिक, इस बांध के निर्माण के लिए लगभग 1,35,733 पेड़ों को काटा जाना प्रस्तावित है, जिससे जैव विविधता को भारी नुकसान होगा।
- भूकंप का खतरा: यह पूरा हिमालयी क्षेत्र अत्यधिक भूकंप-संवेदनशील (High Seismic Zone) माना जाता है। स्थानीय लोगों और वैज्ञानिकों को डर है कि इतने बड़े बांध के टूटने से निचले इलाकों (विशेषकर असम और अरुणाचल) में तबाही आ सकती है।

महत्वपूर्ण तथ्य

2. भारत इसे क्यों बना रहा है? (रणनीतिक और आर्थिक कारण)

- भारत सरकार के लिए यह प्रोजेक्ट बेहद महत्वपूर्ण है, जिसके पीछे दो बड़े कारण हैं:

A. चीन को रणनीतिक जवाब (Strategic Counter to China)

- पानी पर अधिकार (Water Rights): चीन तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी (वहां यारलुंग त्सांगपो) पर 60,000 मेगावाट का दुनिया का सबसे बड़ा मेगा डैम (Medog Dam) बना रहा है। अगर चीन वहां से पानी रोकता है या अचानक भारी पानी छोड़ता है, तो पूर्वोत्तर भारत (असम और अरुणाचल) में सूखा या विनाशकारी बाढ़ आ सकती है। [10, 14, 15]
- जल भंडारण (Live Storage): भारत सुबनसिरी और सियांग जैसी नदियों पर बड़े बांध बनाकर विशाल जल भंडारण क्षमता (Live Storage) तैयार कर रहा है। इससे चीन द्वारा अचानक छोड़े गए बाढ़ के पानी को नियंत्रित किया जा सकेगा और अंतरराष्ट्रीय नियमों के तहत नदी के पानी पर भारत का 'प्रायर यूज़ राइट' (पहले उपयोग का अधिकार) भी मजबूत होगा। [10, 15]

B. ऊर्जा सुरक्षा और विकास (Energy & Economic Benefits)

- क्लीन और ग्रीन एनर्जी: भारत के नेट-जीरो (कार्बन उत्सर्जन कम करने) के लक्ष्य को पूरा करने के लिए यह 1,605 मेगावाट की परियोजना ग्रिड को स्थिरता देगी और सौर व पवन ऊर्जा के उतार-चढ़ाव को संतुलित करेगी।
- बाढ़ नियंत्रण: सुबनसिरी नदी के कारण असम के मैदानी इलाकों में हर साल भीषण बाढ़ आती है। इस बांध के जलाशयों की मदद से पानी के बहाव को नियंत्रित (Flood Moderation) कर बाढ़ के खतरे को कम किया जा सकेगा।
- पूर्वोत्तर का आर्थिक विकास: इससे पूरे पूर्वोत्तर भारत में बिजली की कमी दूर होगी, रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे और इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास होगा।

महत्वपूर्ण तथ्य

Media association challenges govt.'s data privacy law in Supreme Court

The Hindu Bureau
NEW DELHI

The Digital News Publishers Association (DNPA), which has members drawn from across the media spectrum, including those owned by the Ambani and Adani Groups, has challenged the Union government's privacy law as a violation of journalistic freedom.

A three-judge Bench headed by Chief Justice of India Surya Kant is scheduled to hear a batch of petitions filed by activists on Tuesday. *The Hindu* is a member of the DNPA.

The petition filed by the DNPA, which is also listed before the Bench, challenged specific provisions of the Digital Personal Data Protection (DPDP) Act, 2023, and the Digital Personal Data Protection Rules, 2025.

The DNPA said the law was completely in contravention with the law laid down by the Supreme Court in its privacy judgment, which held the right inviolable and fundamental to human dignity and life. "They impermissibly restrict the fundamental right to information and freedom of speech and expression," the petition said.

No exemption

They fail "to provide any exemption in favour of journalistic activity as a distinct class of processing, entitled to constitutional protection under Article 14 and 19(1)(a) of the Constitution of India and threaten the full spectrum of journalistic activity carried out by journalists, ground reporters, citizens, whistleblowers, RTI activists, and other stakeholders," the petition said.

It said publishers, editors, reporters and correspondents were, as a consequence of the law, brought within a regime of notice and prior consent, compelled erasure, and verifiable consent.

Unbridled authority

Section 36 of the DPDP Act, read with Rule 23 and the Seventh Schedule of the DPDP Rules, vested the Central government with an unbridled and standardless authority to requisition any information from any data fiduciary or intermediary, unaccompanied by judicial oversight, any requirement of necessity or proportionality, or notice to the affected data principal.

"Such a power is capable of being turned to the identification and targeting of journalistic sources and is thus constitutionally infirm," the petition said.

Section 44 (3) of the DPDP Act, by amending Section 8 (1)(j) of the Right to Information Act, 2005, has placed every category of "personal information" beyond the reach of disclosure.

DPDP Act - 2023
Digital Personal Data Protection Act, 2023
DPDP Rules - 2025

महत्वपूर्ण तथ्य

A ready solution to tackle anaemia



Marthi Venkatesh Mannar
Former Senior Advisor, Tata Trusts



Rajiv Tandon
Executive Director, The Health Continuum, Adjunct Professor of Public Health Practice at the Public Health Foundation of India, Indian Institutes of Public Health

Despite significant economic progress and sustained public health efforts, anaemia – driven significantly by iron deficiency – continues to be one of India's most pressing public health challenges. Affecting over half of Indian women and almost three-fourths of children, anaemia contributes to maternal mortality, an intergenerational cycle of malnutrition, impaired cognitive development, reduced productivity and substantial economic losses. The Government of India's 7X7X7 Anaemia Mukt Bharat (AMB) strategy, which was launched recently, rightly recognises the multifactorial nature of anaemia through a comprehensive approach spanning prevention, screening, treatment, dietary diversification and behaviour change. Yet, one proven preventive intervention remains significantly underutilised.

The promise of fortification

That intervention is Double Fortified Salt (DFS) – salt fortified with both iodine and iron. Salt offers an unparalleled opportunity to address iron deficiency. Consumed daily by virtually every household across India, in predictable quantities regardless of income or geography, it is uniquely suited to deliver a preventive nutrition intervention at population scale. DFS also addresses one of the fundamental challenges of anaemia control – sustained compliance.

Delivering iron through an everyday food complements interventions such as iron supplementation and dietary diversification, whose effectiveness depends on regular adherence. India already has one of the world's most successful public health platforms in Universal Salt Iodisation, with around 95% of households consuming iodised salt. Building on this existing infrastructure, DFS is already distributed to an estimated 76 million people across four States through government safety-net programmes. Global and Indian evidence strongly support DFS. A global review has shown that DFS can reduce anaemia by up to 21%. Randomised controlled trials in Bengaluru, Darjeeling, and Punjab, along with large-scale implementation in Uttar Pradesh, have shown improvements in iron status and confirmed that, when manufactured to validated specifications, DFS is acceptable to consumers, reduces iron deficiency, and is highly cost-effective. A DFS standard has been issued by the Government of India's Food Safety and Standards Authority (FSSAI), and the Government of India actually mandates DFS' inclusion in the national school feeding programme (PM POSHAN and the national early childhood development programme- Integrated Child Development Scheme, or ICDS).

At an estimated cost of ₹14-₹20 per person annually, DFS represents one of the most affordable population-level nutrition interventions available, with a benefit-cost ratio of 4.2:1 for national DFS introduction, primarily driven by improved health outcomes and subsequent increases in labour productivity. India also possesses the manufacturing capacity to produce high-quality DFS at scale. Established fortification technologies, centralised salt production and existing laboratory infrastructure make quality assurance and regulatory monitoring simpler than for many other fortified foods.

Double fortified salt offers a scalable solution to one of India's most pressing public health challenges

What the barriers are

What has limited DFS from wider adoption? The barriers are now primarily institutional rather than technical. The next imperative is to accelerate its nationwide adoption and ensure last-mile access, particularly the Public Distribution System apart from social safety-net programmes, across all States through a central flagship scheme. Although DFS is recommended under PM POSHAN and ICDS, its integration into the largest safety net programme i.e., the Public Distribution System (PDS) – which reaches around 800 million beneficiaries – remains uneven because implementation depends largely on State governments. Greater policy commitment, dedicated financing, stronger quality assurance, wider commercial availability and consumer awareness are now needed to accelerate nationwide scale-up. These are implementation challenges – not technological ones – and are well within India's capacity to address.

Like all public health nutrition interventions, DFS should be implemented within a robust regulatory framework. It should complement existing strategies under Anaemia Mukt Bharat, align with India's sodium reduction goals, and continue to be accompanied by screening for haemoglobinopathies such as thalassaemia and sickle cell disease. These safeguards are well recognised through experience of rice fortification programme and can be readily integrated into implementation and monitoring systems.

The launch of the revised AMB strategy provides renewed momentum to strengthen the preventive pillar of India's anaemia response and advance the vision of Viksit Bharat 2047.

Potential to be a global model

India has already shown the world how science, policy, public systems, and public awareness can transform nutrition through Universal Salt Iodisation. By scaling DFS nationally, India can not only accelerate progress towards Anaemia Mukt Bharat but also contribute to global efforts to reduce iron deficiency by demonstrating an affordable, scalable model for other low- and middle-income countries.

Anaemia mukt Bharat strategy

7×7×7

DFS = Double Fortified Salt

महत्वपूर्ण तथ्य

- **एनीमिया की समस्या और समाधान:** भारत में आयरन की कमी के कारण एनीमिया एक गंभीर जन स्वास्थ्य चुनौती बनी हुई है, जो आधे से अधिक भारतीय महिलाओं और लगभग तीन-चौथाई बच्चों को प्रभावित करती है. इसका एक प्रभावी समाधान **डबल फोर्टिफाइड सॉल्ट (DFS - यानी आयोडीन और आयरन दोनों युक्त नमक)** है।
- **DFS के लाभ और लागत:** DFS एनीमिया को 21% तक कम कर सकता है। प्रति व्यक्ति सालाना मात्र ₹14-₹20 की अनुमानित लागत के साथ यह सबसे किफायती पोषण हस्तक्षेपों में से एक है। इसे FSSAI द्वारा मान्यता प्राप्त है और PM POSHAN तथा ICDS योजनाओं के तहत भी शामिल किया गया है।
- **चुनौतियां और आगे की राह:** हालांकि DFS का वितरण सरकारी योजनाओं (जैसे PDS) के माध्यम से लगभग 76 मिलियन लोगों तक है, लेकिन राज्यों में इसका कार्यान्वयन असमान है। इसे व्यापक स्तर पर लागू करने के लिए मजबूत नीतिगत प्रतिबद्धता, जन जागरूकता और वितरण प्रणाली को बेहतर बनाने की आवश्यकता है।

महत्वपूर्ण तथ्य

Lula beats far-right, wins 4th presidential term

- Brazilian President makes a dramatic comeback after trailing in the first round against Bolsonaro
- Lula secures a historic 64 million votes, defeating far-right leader by more than four million votes
- Brazil is nobody's backyard, he says amid alleged U.S. meddling in election in favour of Bolsonaro

Shobhan Saxena
SAO PAULO

Luiz Inácio Lula da Silva secured a historic fourth presidential term, defeating Flávio Bolsonaro of Liberal Party (PL) in Brazil's runoff on Sunday. Lula secured 64 million votes, the highest total ever recorded in a Brazilian presidential election, defeating Mr. Bolsonaro by more than four million votes.

Declaring a "defeat for lies and denialism", Lula, 80, pledged to govern for all Brazilians and protect the country's sovereignty.

"Brazil is nobody's backyard," he declared at a midnight rally, sending a message to U.S. President Donald Trump as he said Brazil has defeated the far-right lies, foreign interference and election meddling by social media firms.

An emotional Lula thanked women and older voters for their support and praised the mobilisation of youth on the streets and on social media.

"People went out to vote because we managed to convince them that their votes were extremely important to safeguarding democracy in the country," he said.

Lula secured an unprecedented comeback in the election. He trailed in the first round, receiving 45.16% of valid votes against 47.03% for Flávio.



Aligned stars: Brazilian President Luiz Inacio Lula da Silva greets supporters outside his residence in Sao Paulo on Sunday. REUTERS

Dramatic democracy

As the prospect of a Bolsonaro presidency caused a major concern among the young, especially about public education, healthcare and transport, millions joined weekly rallies across the country, pledging support for Lula and demanding protection of public services.

On Sunday, Lula told his young supporters that their voices have been heard.

"We will make increasing investment in the Unified Health System, develop a national artificial intelligence system, continue to expand public universities and support the digital and creative economies," said Lula.

The turnaround after the first round of election on October 4 was not only historic but also dramatic. Lula's official campaign team almost took a back seat as millions of people came out on streets and joined the social media campaign.

With most opinion polls predicting a neck-to-neck race and some even giving an edge to Mr. Bolsonaro till a few days back, the Workers' Party shifted its messaging from a comparison of the candidates' personal records to a forward-looking agenda centred on concrete promises.

Even as Lula made his promises to the electorate, his campaign faced a big challenge: Big Tech firms openly supported Bolsonaro's campaign while suppressing advertising by Lula's team.

In his speech on Sunday, Lula said he had to overcome "interference" by digital platforms and pledged to regulate big tech companies in Brazil.

"This election was one in which we had to overcome interference coming from outside and through digital platforms. We will have to regulate them," Lula said.

On October 16, after an expose in the Brazilian media, Meta had admitted that its artificial intelligence tool had blocked the generation of advertising material supporting Lula while allowing the same technology to be used by the Flávio campaign.

EDITORIAL: A FINAL SURGE
» PAGE 8

YouTube Homework

BRAZIL
Location

महत्वपूर्ण तथ्य



अमर उजाला

लद्दाख ने रचा इतिहास: बना देश का पहला 100% जैविक केंद्र शासित प्रदेश, एलजी वीके सक्सेना ने की घोषणा

Sun, 25 Oct 2026 04:11 PM IST

महत्वपूर्ण तथ्य

'चाइना ज़ोरिल्ला' (दुनिया का सबसे बड़ा इलेक्ट्रिक जहाज़)

- अक्टूबर 2026 में, अर्जेंटीना और उरुग्वे के बीच दुनिया के सबसे बड़े बैटरी-चालित इलेक्ट्रिक पैसेंजर जहाज़ (Ferry) ने अपनी व्यावसायिक यात्रा शुरू की है, जिसका नाम इसी महान अभिनेत्री के सम्मान में 'चाइना ज़ोरिल्ला' रखा गया है।
- निर्माता और क्षमता: इसे ऑस्ट्रेलिया की प्रसिद्ध शिपबिल्डिंग कंपनी Incat Tasmania ने बनाया है। यह 130 मीटर लंबा कैटामैरन (जहाज) है, जिसमें 2,100 यात्री और 225 वाहन एक साथ सफर कर सकते हैं।
- तकनीक: यह पूरी तरह से पर्यावरण के अनुकूल (Zero Emission) है। इसमें 250 टन से अधिक वजनी बैटरी सिस्टम लगा है जो 8 इलेक्ट्रिक वॉटरजेट्स को पावर देता है।
- रूट: यह अर्जेंटीना की राजधानी ब्यूनस आयर्स और उरुग्वे के कोलोनिया शहर के बीच रियो डी ला प्लाटा नदी को पार करता है।



महत्वपूर्ण तथ्य

- **अंतरराष्ट्रीय मसाला सम्मेलन 2026 (International Spice Conference - ISC 2026)**, जिसे भारत में व्यापक रूप से वैश्विक मसाला और खाद्य सुरक्षा पर चर्चा का एक प्रमुख मंच माना जाता है,
- कहाँ हुआ: यह सम्मेलन भारत के केरल राज्य के कोच्चि (Cochin) शहर में स्थित 'ली मेरिडियन' (Le Méridien) होटल में आयोजित किया गया था.
- कब से कब तक हुआ: इसका आयोजन 23 फरवरी से 26 फरवरी 2026 तक (चार दिनों के लिए) किया गया था.
- किसने आयोजन कराया: इस भव्य सम्मेलन का आयोजन ऑल इंडिया स्पाइसेस एक्सपोर्टर्स फोरम (AISEF) द्वारा किया गया था, जो भारत के मसाला निर्यातकों की एक प्रमुख संस्था है. इस साल की थीम "Spice 360: Getting Future Ready" थी.



महत्वपूर्ण तथ्य

चर्चा में रही प्रमुख पुस्तकें (Books in News)

- **"The Architecture of Peace":** यह पुस्तक संयुक्त राष्ट्र के पूर्व राजनयिक **अमनदीप सिंह गिल** द्वारा लिखी गई है, जो वैश्विक संघर्षों और शांति स्थापना पर आधारित है।
- **"Shifting Sands: The New Global Order":** प्रख्यात अर्थशास्त्री **डॉ. अरविंद सुब्रमण्यम** द्वारा लिखित यह पुस्तक विकासशील देशों की आर्थिक चुनौतियों पर प्रकाश डालती है।
- **"Resilient Bharat":** गृह मंत्रालय के सहयोग से संकलित यह पुस्तक भारत के आपदा प्रबंधन और बुनियादी ढांचे के विकास की सफलता की कहानियों को बयां करती है।

Home Assignment

- ❑ Data Privacy Day
- ❑ Digital India

प्रश्न:

- **हाल ही में चर्चा में रहा "MUSCAT" निम्नलिखित में से किस देश में स्थित है, जिसे एक नए आर्थिक और व्यापारिक केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है?**

A. सऊदी अरब
B. यमन
C. संयुक्त अरब अमीरात (UAE)
D. ओमान

Thanks For Watching

Learn
Share
Grow
Together ♡

Better
Students
Brighter
Tomorrow

Follow us for more Updates

@RRESULTMITRAOFFICIAL

Join our Telegram

@SUNILVERMA_THEIASMENTOR

Follow on Instagram

Subscribe Now

Stay Connected



